Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मथुरा जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेश का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

मथुरा जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेश का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

Chanchal Sharma[1] Dr. Sandhya Kumari Singh[2]

[1]Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

[2]Lecturer, B.S.A College, Mathura

---------------------------------x---------------------------------

"वातावरण या वातावरण में उपस्थित उद्दीपक क्रियाओं का कारण बनते हैं जो कि व्यक्ति की इन्द्रियों तक पहुँचते हैं और बाद में हृदय तक।"

अरस्तु के अनुसार

सबसे पहले **अरस्तू** ने ही व्यक्ति के व्यवहार पर परिवेष के महत्व को व्यक्त किया उसके अनुसार में हृदय में अंकित ये ही चिह्न हमारे विचारों के साधन बनते हैं। ये विचार आपस में एक दूसरे से जुड़ते हुए चिंतन व तर्क की प्रक्रिया का उदय करते हैं।

प्रस्तावना :

बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में वंशानुक्रम व परिवेष के क्रम में पारिवारिक परिवेष का विशिष्ट महत्व है क्योंकि वंशानुक्रम से प्राप्त गुणों का परिमार्जन व परिष्करण परिवार में ही होता है। बालक परिवार में जन्म लेता है, परिवार में ही उसका पालन पोषण होता है। परिवार के सदस्यों के साथ अन्तः क्रियायें करता है। अतः इन क्रियाओं के फलस्वरूप ही उसे अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही परिवार में रहते हुए विभिन्न अभिवृत्तियों, अभियोग्यताओं, जीवन शैली, व्यवहार व आचरण के मापदण्डों तथा अन्य व्यक्तित्व गुणों जैसे तर्क, क्षमता, निर्णय क्षमता, सृजनात्मकता, स्वतन्त्र विचारशीलता आदि के विकास का अवसर मिलता है।

परिवार से हमारा तात्पर्य बच्चों व उनके माता–पिता तथा भाई–बहिनों से है। **क्लेयर** ने भी परिवार की व्याख्या करते हुए बताया है कि परिवार सम्बन्धों की वह व्यवस्था है जो माता–पिता व उसकी सन्तानों के मध्य पायी जाती है। **जर्मन** शिक्षा शास्त्री **पैस्टालॉजी** के शब्दों में – ***"परिवार प्रेम और स्नेह का केन्द्र है, शिक्षा का सर्वोत्तमस्थान है और बच्चे का सर्वप्रथम विद्यालय है।"***

पारिवारिक परिवेष से तात्पर्य घर में निहित उस वातावरण से है जो संस्कृति से संस्कृति, एक समाज से दूसरे समाज तथा एक परिवार से दूसरे परिवार में अन्तर स्पष्ट करता है। परिवार की सबसे बड़ी विशेषता है– प्रेम, सहानुभूति और सहयोग पूर्ण वातावरण। अतः पारिवारिक परिवेष का जैसा प्रभाव बालकों पर पड़ता है, वैसा ही व्यक्तित्व बालक का बन जाता है। आवश्यक प्रेम तथा वात्सल्य के अभाव में बच्चे प्रायः अर्न्तमुखी, दिवास्वप्न देखने वाले तथा कल्पनाओं में खोने वाले बन जाते हैं। प्रायः कुछ माता पिता अपने बच्चे की छोटी से छोटी समस्या के विषय में भी स्वतन्त्र निर्णय लेने की छूट नहीं दिया करते हैं, ऐसे बच्चे आवश्यकता से अधिक निर्भरशील एवं दब्बू बन जाया करते हैं, इसके विपरीत प्रकार के बच्चे प्रायः स्वच्छन्द प्रकृति के बन जाया करते हैं। इस प्रकार के बच्चे आगे चलकर बड़ी से बड़ी समस्या के विषय में भी बिना किसी संकोच के ही स्वतन्त्र रूप से निर्णय ले लिया करते हैं। अतः परिवार ही संस्कारों, परम्परा एवं संस्कृति का वाहक है जो बालक के व्यक्तित्व को प्रथम आकार प्रदान करने में सहायक है **बोगार्डस** ने भी परिवार के महत्व को दर्शाते हुए उचित ही लिखा है कि सभ्यता की भावी अवस्था में परिवार मानव जाति की अनौपचारिक शिक्षणशाला का उचित केन्द्र बना रहेगा।

निःसन्देह घर का परिवेष बालक की अभिवृद्धि एवं विकास में गहन प्रभाव डालता है। लेकिन हमारे देश में अधिकांश शिशुओं व किशोरों को स्वस्थ पारिवारिक परिवेष नहीं मिलता है जबकि किशोरों में आत्म विश्वास में वृद्धि करने के लिए संज्ञानात्मक पारिवारिक परिवेष की नितान्त आवश्यकता है। संज्ञानात्मक पारिवारिक परिवेष से तात्पर्य ऐसे परिवेष से है जहाँ माता–पिता अपने बालक की विकासशील आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील तथा उत्तरदायी हैं। **बरार एवं बरार (1989)** ने भी अपने अध्ययन के निष्कर्ष में बताया है कि मध्यमवर्गीय माता–पिता अपने बालकों को अपेक्षाकृत अच्छा परिवेष प्रदान करते हैं जो उनकी बौद्धिक क्षमताओं को उद्दीप्त करता है। किशोर एक प्रकार से तीव्र सांवेगिक जीवन व्यतीत करते हैं। इस काल में किशोरों में भावनाओं की तीव्रता अहम् भाव, अस्थिरता, भविष्य के प्रति तीव्र चिंता आदि भाव निहित होते हैं। वे अपने जीवन में सभी अच्छी चीजों को प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे में उसे शुरू से ही अपने सामान्य कार्यो के साथ–साथ शैक्षिक तथा व्यावसायिक चयन के सन्दर्भ में निर्णय लेने होते हैं क्योंकि परिवार में रहते हुए निर्णय लेने की प्रक्रिया एक परिवारिक क्रिया है जिसमें कार्य की आवश्यकता होती है। परिवार में बहुत से घरेलू निर्णय परिवार की नित्यचर्या हैं और वे हमारे व्यवहार का एक हिस्सा बन जाते हैं जो किशोरों में निर्णय क्षमता को विकसित करते हैं। इन निर्णयों में परिवार के सदस्यों की विशेष सहभागिता होती है लेकिन अलग–अलग परिवारों में यह सहभागिता भिन्न–भिन्न होती है जो बच्चों में एक अलग प्रकार की निर्णय क्षमता विकसित करती है।

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। मानव ने अनेक अविष्कार किए परन्तु आज तक वह कोई ऐसी व्यवस्था नहीं कर पाया जो परिवार का स्थान ले सके। इसका मूल कारण है कि

परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्य अन्य संस्थायें करने में असमर्थ हैं। परिवारिक परिवेष का महत्व उसके कार्यों के कारण बालक के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण कारक के रूप में स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

शोध अध्ययन की आवष्यकता :

आजकल, लगभग प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सहमत है कि हमारा अर्जित किया गया व्यवहार व्यक्ति व उसके सामाजिक समूहों के मध्य अन्तःक्रिया का परिणाम है। व्यक्ति जैसे माता–पिता, भाई बहिन, सम्बन्धी, प्रधानाध्यापक, अध्यापक व मित्र, बालक से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्तःक्रिया करते हैं और उसकी क्षमताओं, कौशलों तथा व्यवहार को आकार प्रदान करते हैं।

आज के शैक्षिक युग में जहाँ सार्वभौमिकरण और तीव्र वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास हो रहा है, पूरे विश्व में किशोर तथा युवा अपने आजीविका के चयन व योजना के संदर्भ में विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, ज्ञानात्मक संरचना, रूचि, मूल्य पद्धति तथा व्यक्तित्व गुणों के अनुसार सही आजीविका का चयन करके व्यक्ति अपनी सम्भव शक्तियों के साथ उच्च सीमा तक संतोष प्राप्त कर कार्य क्षेत्र में प्रदर्शन कर सकता है।

चरों की व्याख्या :

किसी भी अनुसन्धान में अध्ययन से सम्बन्धित कारकों की अनुभवपूर्ण एवं तार्किक व्याख्या आवष्यक होती है। इस शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों की व्याख्या निम्नानुसार है।

पारिवारिक परिवेषः

प्रस्तुत अध्ययन हेतु पारिवारिक परिवेष से तात्पर्य है *''एक बालक के लिये उसके पूर्व बाल्यकाल से घर . परिवार में उपलब्ध सामाजिक, संवेगात्मक तथा ज्ञानात्मक समर्थन से है।''* इस क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न शोधार्थियों ने पारिवारिक परिवेष को माता–पिता द्वारा बालक के पालनपोषण व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया है। **जॉनसन आर0सी0 एवं मैडीनस जी0आर0 (1969)** ने माना है कि घर का मनोवैज्ञानिक वातावरण चार वृतपादों में से किसी भी चतुर्थांशों में हो सकता है जिसमें से प्रत्येक चार सामान्य संगठनों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है; स्वीकृति–स्वायत्तता, स्वीकृति–नियंत्रण, अलगाव (अस्वीकृति) स्वायत्तता, तथा अलगाव (अस्वीकृति) – नियंत्रण।

आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव :

आजीविका से अभिप्राय सिर्फ नौकरी प्राप्त करना ही नहीं है अपितु यह एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जिसका सम्बन्ध व्यक्ति की रूचि, क्षमता, काम से मिलने वाली सन्तुष्टि तथा जीवन के सिद्धान्तों व आदर्शों से जुड़ा होता है यह विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक स्तर पर विषयों के चयन व चयनित विषय में अच्छा प्रदर्शन करने हेतु तैयार करता है। जीविका एक व्यक्ति की आजीवन उन्नति को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। ***'' आजीविका, एक व्यक्ति द्वारा अपने पूर्व व्यावसायिक, व्यावसायिक तथा उत्तर व्यावसायिक जीवन में अधिकृत स्तरों (प्रतिष्ठाओं) का क्रम रूप है।''***

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैंः–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर (छात्र एवं छात्राएँ) पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का स्थानीयता के आधार पर (ग्रामीण/शहरी) विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालयों के प्रकार के आधार पर (सरकारी व गैर–सरकारी) पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तावित अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
4. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
5. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
6. सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।
7. निजी माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध अध्ययन का क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध अध्ययन उत्तर प्रदेष प्रान्त के मथुरा नगर एवं मथुरा जिले तक ही सीमित रखा गया।

न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थिनी ने दत्त संकलन हेतु प्रतिदर्श विधि से मथुरा जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के सरकारी तथा निजी दो प्रकार के माध्यमिक विद्यालय चुने हैं। इन विद्यालयों में से कुल 800 छात्र/छात्रायें अध्ययन हेतु लिये गये है।

www.ignited.in

न्यादर्श का चयन :

न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम शोधार्थिनी ने शिक्षा विभाग द्वारा मथुरा जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की सूची प्राप्त की है। इस सूची के अनुसार मथुरा जिले के शहरी क्षेत्र में आठ विद्यालय हैं। अतः माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की संख्या शहरी क्षेत्र में बारह है। अतः उसमें निजी व सरकारी विद्यालयों का यादृच्छिकी विधि से चयन किया।

अध्ययन का प्रारूप

(1) अनुसंधान विधि :

अनुसंधानात्मक विधि के प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। न्यादर्ष हेतु मथुरा जिले के स्कूल के प्रति अभिवृत्ति वाले 800 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

(2) अध्ययन उपकरण :

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण परीक्षण डॉ. करूणाषंकर मिश्र द्वारा निर्मित है।

आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव (आजीविका पूर्णता मापनी) परीक्षण डॉ. निर्मला गुप्ता द्वारा निर्मित है।

प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रदत्तों के विष्लेषण एवं विवेचना के पष्चात् उपयुक्त निष्कर्ष तक पहुँचने के लिये उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

1. मध्यमान (डम।छ)
2. मानक विचलन ेँ(व)
3. प्रसरण विश्लेषण (।छव्ट।)

अध्ययन की प्रक्रिया :

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों को मथुरा जिले के विभिन्न विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित कर उन पर **'पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का परीक्षण'** प्रषासित किया गया। उपरोक्त प्राप्त आंकडों का विष्लेषण कर परिणाम प्राप्त किये गये।

अध्ययन के परिणाम :

शोध के परिणामों को उद्देष्य निम्नानुसार किया जा रहा है।

1.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो का पारिवारिक परिवेष							
		सरकारी (।1)		निजी (।2)		योग	प्रसरण का स्रोत	
		ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी		वर्गो का योग ;ैद्ध	424.57
	मध्यमान	46.12	47.64	49.14	49.73	48.16	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	7.93	8.83	11.19	10.52	9.79	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	212.9
	संख्या	200	200	200	200	800	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	2.26

2.	माध्यमिक स्तर के छात्राओं का पारिवारिक परिवेश							
		ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी		वर्गो का योग ;ैद्ध	108.99
	मध्यमान	44.83	47.02	49.07	49.13	47.51	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	7.08	10.12	11.04	10.7	9.98	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	54.5
	संख्या	100	100	100	100	400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	0.56

3.	माध्यमिक स्तर के छात्रों का पारिवारिक परिवेष							
		ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी		वर्गो का योगैद्ध	348.46
	मध्यमान	47.4	48.25	49.23	50.33	48.80	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	8.54	7.33	11.4	10.36	9.57	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	174.23
	संख्या	100	100	100	100	400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	1.91

4.	माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेष							
				शहरी				
				सरकारी	निजी		वर्गो का योगैद्ध	181.79
	मध्यमान			47.64	49.73	48.16	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन			8.83	10.52	9.76	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	90.9
	संख्या			200	200	400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	0.97

5.	माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेष							
		ग्रामीण						
		सरकारी	निजी				वर्गो का योगैद्ध	220.13
	मध्यमान	46.12	49.15				स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	7.93	11.19				वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	110.07
	संख्या	200	200			400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	1.16

6.	माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेष							
		ग्रामीण	शहरी				वर्गो का योगैद्ध	546.74
	मध्यमान	46.12	47.64			46.88	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	7.93	8.83			8.42	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	273.37
	संख्या	200	200			400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	3.94

7.	माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेष							
		ग्रामीण	शहरी				वर्गो का योगैद्ध	13.79
	मध्यमान	49.15	49.73			49.44	स्वतन्त्रता का अंष ;कद्धि	2
	मानक विचलन	11.19	10.52			10.85	वर्गो का मध्यमान ;डैद्ध	6.9
	संख्या	200	200			400	एफ. मूल्य ;थ्द्ध	0.06

उपरोक्त तालिका संख्या –1 से 7 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पारिवारिक परिवेष का उनकी आजीविका पर प्रभाव

कf1 त्र 2 तथा कf2 त्र 799 पर ॰ का अपेक्षित मूल्य

' त्रुटि के 0.01 स्तर पर = 3.005

'' त्रुटि के 0.05 स्तर पर = 4.64

1. तालिका सं. 1 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 2ण26 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

2. तालिका सं. 2 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 0ण56 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

3. तालिका सं. 3 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 1ण91 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

4. तालिका सं. 4 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 0ण96 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

5. तालिका सं. 5 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 1ण16 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

6. तालिका सं. 6 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 3ण94 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

7. तालिका सं. 7 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि १ का प्राप्त मूल्य 0ण06 है जो कि क1 त्र 2 तथा क2 त्र 797 पर त्रुटि 0.05 के स्तर से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझावः

समय सीमा को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थिनी ने इस तथ्य का पूर्ण ज्ञान करके जिस समस्या का अध्ययन करने का प्रयास किया है वह तो अपनी सीमा तक पूर्ण रहा लेकिन शोध जैसे वृहद कार्य को पूर्ण करने में कुछ न कुछ अंश अछूते रह जाते हैं जिसका मुख्य कारण शारीरिक श्रम, अर्थ एवं समय हैं प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुये अवशेषित अंशों पर शोध कार्य किये जा सकते हैं–

प्रस्तुत शोध मथुरा जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर किया गया है यह बड़े संभागीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

- ➢ विद्यालय के प्रकारों को ध्यान में रखते हुये सरकारी तथा निजी विद्यालयों पर यह शोध कार्य किया गया है इसके अतिरिक्त आवासीय विद्यालय तथा गैर आवसीय विद्यालय के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
- ➢ संकाय की विभिन्नता जैसे कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है।
- ➢ प्रस्तुत अध्यन में पारिवारिक परिवेष पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है, उपरोक्त चरों का परस्पर सम्बंध आजीविका से भी ज्ञात किया जा सकता है।
- ➢ विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर की विभिन्नता के आधार पर भी यह अध्ययन सम्भव है।
- ➢ विभिन्न कक्षा स्तरों पर आजीविका पूर्णता का तुलानात्मक अध्ययन सम्भव है।
- ➢ अनुसूचित जाति तथा जनजातियों के विद्यार्थियों का उपरोक्त चरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ➢ आजीविका पूर्णता के आधार पर शहरी वह ग्रामीण विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ➢ माता–पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि, परिवार के आकार, परिवार के आय आदि चरों को भी आगामी अध्ययन हेतु समाहित किया जा सकता है।
- ➢ इस अध्ययन को और अधिक बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता है।
- ➢ विभिन्न परिवेष के प्रभावों को आजीविका के अलग–अलग भागों अभिवृत्ति परीक्षण तथा क्षमता परीक्षण पर किया जा सकता है।

✯✯✯✯

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बघेला, हेतसिंहः ''शिक्षा तथा भारतीय समाज'', जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, संस्करण ए
2. बैस्ट, जॉन डब्ल्यूः 'रिसर्च एन एजूकेशन,' प्रिन्टस हॉल, न्यूयॉर्क
3. बैकेनरिज, मरियन ई0 तथा विन्सैंट, ई0 ली0 : चाइल्ड डेवेलपमेन्ट, टोक्यों टोप्सन क॰ लि, 1966
4. कपिल, एच॰के॰ : सांख्यिकी के मूल तत्व आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1992
5. गैरेट, हेनरी ई. : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण 11 , 1989
6. ग्रोन्लुण्ड, नॉर्मन ई॰ः मेजरमैन्ट एण्ड इवेल्युएशन इन टीचिंग, न्यूयॉर्क मैकमिलन पब्लिशिंग के फिफ्त एडीशन, 1981
7. हिलगार्ड, पी0 : ''इम्प्रूविंग सोशल लर्निंग इन द एलीमैन्ट्री स्कूल, टीचर्स कॉलेज, न्यूयार्क 1954

8. जॉनसन, रोनाल्ड सी0 एवं जीनी एच॰ मैडीनसः 'चाइल्ड साइकोलॉजीः बिहेवियर एण्ड डेवेलवमेन्टः न्यूयॉर्कः जॉन विले एण्ड सन्स,

9. कक्कड़, एस0बी0 व भार्गव, महेशः करंट इश्यूज़ इन एजूकेशन एंड साइकोलॉजी, आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस, संस्करण–प 2003

10. मोहन, एस. (1999) : 'कॅरियर डैवेलपमेन्ट एन इण्डिया, श्योरी, रिसर्च एण्ड डेवेलपमेन्ट,' न्यूज देहलीः विकास पब्लिशिंग हाउस,

11. मॉर्गन, सी॰टी॰ एण्ड किंग : इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी, न्यूयॉर्क, फोर्थ एडीशन, 1978

12. पाण्डेय, के.पी. (1998): 'शैक्षिक अनुसंधान' वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण–प्ए

13. प्रसाद, एल॰एम॰ : 'प्रिंसीपल्स एन्ड प्रैक्टिस ऑफ मैनेजमेन्ट' नई दिल्ली सुल्तान चन्द एण्ड सन्स संस्करण ट, 1999,

14. स्ट्रॉग, आर॰ : एन इन्ट्रोडक्शन टू चाइल्ड साइकोलॉजी न्यूयॉर्क : मैकमिलन कं॰ 1967.

15. थॅमस एन॰जी॰एण्ड वर्क, एल॰ई॰; इफैक्ट ऑफ स्कूल एन्वायरमेन्ट, ऑन दि डेवेलपमेन्ट, ऑफ यंग चिल्ड्रन क्रिएटिविटी, चाइल्ड डेवेलपमेन्ट, 1981.

जर्नल एवं सर्वे

1. अग्रवाल, कुसुमलता (1997): 'इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमीट्री एण्ड एजूकेशन' जन0 1997, वॉ0 28, नं0–1

2. बावा, एस॰ के॰ : डिसीजन मकिंग पैटर्न ऑफ एम्प्लायड वूमैन, बिहेवियरल साइंटिस्ट, 2001, वॉ॰ 2 नं॰ 2,

3. भटनागर, ए॰ व गुप्ता, एन॰: कॅरियर मैच्योरिटी ऑफ सैकेण्डरी स्टूडेन्टसः इफैक्ट ऑफ ए गाइडेंस इन्टरवेन्शन प्रोग्राम, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 1988. वॉ॰ 23 (4),

4. भटनागर, ए0बी0: 'कन्सट्रशन एण्ड स्टैन्डर्डाईज़ेशन ऑफ द ट्रीटमेन्ट एन्वायरमेन्ट इन्वेन्ट्री'. जरनल ऑफ एजूकेशनल साइकोलोजी, 1977, 12 (1 – 2),

5. चन्दन, सुनंदा : सैल्फ कन्सेप्ट, होम क्लाइमेट एस॰ई॰ एस॰ एण्ड सैक्स इन रिलेशन टू कॅरियर चॉयस एटीट्यूडस अमंग हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, 1990, वॉ॰ 25 (1)

6. चेरियन, वी॰ आई॰: 'रिलेशनशिप विटवीन पनिशमेन्ट ऑफ प्यूपिल्स एण्ड देअर एकेडमिक एचीवमेन्ट, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, 1990 वॉ॰ 25 (1),

7. देवगन, प्रवीन : रिअरिंग प्रैक्टिसिज़ ऑफ एजूकेटिड (टिड) पेरेन्टस, प्राची जर्नल ऑफ साइको–कल्चरल डाइमेन्शन्स, 1997, वॉ0 13, नं॰ 1,

8. दत्ता, गीतिका (2005): **डम्त्** जर्नल ऑफ एजूकेशन, वॉल्यूम 1, अप्रैल 2005, नई दिल्लीः मैनेजमेन्ट एजूकेशन एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट,

9. गुप्ता, निर्मला (1989) : 'मैनुअल फॉर इन्डियन अडेप्टेशन ऑफ कॅरियर मैच्योरिटी इन्वेन्टरी', आगरा, नेशनल साइकोलॉजिकल कारपो॰

10. खन्ना, प्रिया (2005): **डम्त्** जरनल ऑफ एजूकेशन, वॉल्यूम 1, अप्रैल, 2005, नई दिल्ली : मैनेजमेन्ट एजूकेशन एण्ड रिसर्च इंस्टीटयूट,

11. मिश्र, करूणाशंकरः मैनुअल फॉर स्कूल एन्वायरमेन्ट इन्वेन्टरी 1984

12. मोहन सुन्दरम, के॰ : स्टडी ऑफ पर्सनैलिटी, साइन्टिफिक क्रिएटिविटी एण्ड एजूकेशल एचीवमेन्ट ऑफ सीनियर सैकेण्डरी स्टूडेन्ट्स, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमैट्री एण्ड एजकेशन, 2000. वॉ॰ 31 (1)

सर्वे :

1. बुच, एम॰बी॰ : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एन एजूकेशन, एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ 1978–83

2. बुच, एम॰बी॰ : फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च एन एजूकेशन, एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ 1983–88

3. बुच, एम॰बी॰ : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एन एजूकेशन, वॉ॰ 1 व 2, एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ 1988–92

पत्र एवं पत्रिकाएँ :

दैनिक जागरण (जोश) समाचार पत्र द प्राइमरी टीचर उत्तर प्रदेष बोर्ड शिक्षण पत्रिका, मेरठ यूनिवर्सिटी न्यूज, दिल्ली

★★★★★★